।। लघुकथा का विकास एक विमर्ष ।।

लघुकथा को हिन्दी साहित्य की नवीन विधा कहना न्यायोचित नही लगता क्योंकि लघुकथा तो हमारे सामाजिक सरोकारों जीवन पद्धति में रची बसी हुई है । हांए लिखित रूप में भले ही लघुकथाओं का अस्तित्व नही था परन्तु मौखिक लोक कथाओं के रूप पहले भी था आज तो पुस्तक के रूप में सर्वत्र उपलब्ध है । अतीत में झांकने पर याद आता है कि हमारी मां,दादा–दादी,नाना–नानी बाल्यकाल में हमें कहानियों के माध्यम से सामाजिक पारिवारिक, नैतिक एवं परमार्थ की दीक्षा अपरोक्ष रूप से दिया करते थे जो हमारे जीवन में ऐसी घर कर जाती थी कि जीवनपर्यन्त रची बसी रहती थी जो किसी न किसी रूप में कम से कम हमारे देष में तो जीवित ही है, आगे भी हस्तान्तरित हो ऐसी उम्मीद तो की जा सकती है । याद है जब गांवों में मेहमान आते थे रात में कहानियों का दौर षुरू होता था और पूरी रात चलता था जिसमें छोटी–छोटी कहानिया होती थी कहानी सुनाने वाला व्यक्ति बीच –बीच में कहानी के कुछ भाग लयबद्ध तरीके से भी प्रस्तुत करता था तब ये कहानियां अलिखित हुआ करती थी, जिसे सुनने के लिये लोग नींद में भी उठकर चले आते थे । हमारे गांव के मेहमान कहानीकारो में मामाश्री राजबलि का नाम आज भी गांव की जेहन जीवित है । इन्ही किस्से कहानियों को सुनकर लोग जीवन मूल्यों और दायित्वों को समझते थे । यही कारण है कि दुनिया में भारतीय पारिवारिक जीवन पद्धति बेहतर है । भारतीय परिवारो में मांता–पिता दादा–दादी,नाना–नानी,मामा–मामी आदि द्वारा राजकुमार, राजकुमारी, राजा–रानी,पषु–पक्षियों, सदावृक्ष, रानीसरंगा, तोता–मैना,सात भइया की बहिन, मूसवा की लदान आदि अने कहानियां बच्चों को सुनायी जाती थी । लघुकथा के विकास की दृश्टि से लोककथाओं–कहावतो को जोड़कर देखा जाना चाहिये जो वास्तव में लघुकथा के ही स्वरूप है । वास्तव में गुजरे जमाने की सामाजिक,पारिवारिक,आर्थिक एवं अन्य मुद्दों पर आधारित छोटी–छोटी मौखिक कहानियां यर्थाथवादी लघुकथाये ही थी जो आज भी हमारे जीवन में रची बसी है । सच तो ये है कि हमारे देष में लघुकथाओं का प्रचलन प्राचीनकाल से चला आ रहा है । ये कथायें हमारे समाज की हिस्सा बन चुकी थी ,जहां चार आदमी इक्टठा होते थे मन बहलाने के लिये,समझने –समझाने के उद्देष्य से छोटी–छोटी कहानियां सुनते –सुनाते थे ।पंचतन्त्र हितोपदेष आदि कहानियां भारतीय लोकजीवन में सदियों से चली आ रही है ।

सच है कि पुरानी लोक कथाओं का स्वरूप उपदेषात्मक हआ करता था । इन कथाओं का मुख्य उद्देष्य नैतिक षिक्षा,सद्भावना,आदर–सत्कार की परम्पराओं को हस्तान्तरित करने की सख्त माध्यम हआ करती थी जो आज भी है परन्तु आज के परिवेश में वृहद् आकार के यर्थाथ को लिपिबद्ध कर लघु आकार दे देकर लघुकथा का नाम दे दिया गया है । । असल में लघुकथा का विकास हिन्दी कहानियों के साथ हो गया था जिसकी पहचान कहानी के नाम से थी परन्तु वर्तमान समय में कहानी को दो नामों से जाना जाने लगा है– कथा अर्थात बडी कहानी और लघुकथा के नाम से अर्थात नामकरण मे विलम्ब, इसलिये नामकरण नवीन कहा जा सकता है पर लघुकथा विधा को नवीन कहना उचित नही लगता । हां माधवराजी सप्रे की कहानी एक टोकरी मिट्टी को प्रथम लघुकथा होने का श्रेय प्राप्त है और इसी वटबीज ने ऐसा आन्दोलन चला दिया की आज वृहद् बृक्ष का आकार अख्तियारकर लिया है और देष में ही नही देष की सीमा भी यह विधा लांघ चुकी है। इसकी यर्थाथवादी प्रकृति को देखते हुए षोध कार्य तक होने लगे है । पत्र–पत्रिकाओं सहित अर्न्तजाल पर भी लघुकथायें लोकप्रिय हो

चुकी है । मेरी तीन लघुकथा की पुस्तके –उखड़े पांव,एहसास और कतरा–कतरा आंसू अर्न्तजाल संस्करण के रूप में उपलब्ध है,इसके अतिरिक्त मेरे ब्लाग–एनएलभारतीलघुथाब्लागस्पाटडाटकाम पर भी है मेरी लघथाये पढी जा सकती है । वेब पत्रिकायें – सृजनगाथाडाटकाम ,स्वर्गविभाडाटटीके, साहित्यंकुंजडाटकाम, अनुभूति,रचनाकारडाटकाम,लघकुथाडाटकाम आदि इस विधा को खूब प्रोत्साहित कर रही है पत्र–पत्रिकाये तो लघुकथाओं का प्रकाषित तो कर ही रही है , पत्र–पत्रिकाओं का नाम गिनाने लगूं तो कई पृश्ठ और जुड़ सकते है । वर्तमान दौर में लघुकथायें मानव मूल्यों की जीवन्त तस्वीरे प्रस्तुत कर रही है । लघुथाओं के पात्र अक्सर हमारे आसपास परिवेश– घर–समाज, बाजार हाट दफतर या यों कहे कि आमआदमी से खास आदमी तक गांव से संसद तक में उपलब्ध होते हैं जिससे लघुकथा अधिक पठनीय और असरकारी हो जाती है । लघुकथाये अच्छाईयों को प्रोत्साहित करती है बुराईयों को दुत्कारने की हिम्मत भी पैदा करती है । लघुकथाओं थोंड़े से षब्दों में बहत कुछ कह देती है जिससे उच्च पढा लिखा ही नही म पढा लिखा व्यक्ति समझ जाता है । छोटी होते हुए भी ये कथाये अपने आप में कल्पना का विस्तार समेटे हुए होती है कि पाठको को तनिक भर में विशय की गहराई तक पहुंचा देती है । वास्तव में सत्य को कहने का प्रयास होती है ये लघुकथायें। मैं यहा पर सुरेष षर्मा की एक लघुकथा भूल का उल्लेख करना चाहूंगा–

बूढा दुबला–पतला षरीर साइकिल रिक्षा चलाते हुए भी हांफ रहा था तो कभी कंधे पर लटके अंगोछे से पसीना पोंछ रहा था। जैसे ही पैडल पर उसके पांव का दबाव पड़ता,घटने के नीचें की नसें उभर उठती थी।

बाबा,इस उम्र मं रिक्षा ढा रहे हो । कोई बेटा नही क्या .....? सहानुभति दर्षाते हुए मैने पूछा ।

भगवान की कृपा से एक हट्टा–ट्टा जवान बेटा है साब,पैडल रोककर उसने जबाब दिया, मगर भल हमसे हो गयी । उसे कालेज की पढाई करवा कर डिग्र दिलवा दी । अब वह गली–गली में डिग्री ढोता फिर रहा है और मैं उसे ढो रहा हूं ।

ऐसा चित्रण तो लघुकथा के माध्यम से किया जा सकता है जो दिल से निकल कर सीधे दिल को स्पर्ष करता है । लधुकथा जीवन के नजदीक होती है इसे लघुकथा की विषेशता कहा जा सकता है जो जीवन ओर जगत से जुड़ी हुई है। लघुकथा में सामाजिक बुराईयों, जातीय भेदभाव, राजनैतिक पैतरेबाजी नैतिक पतन आदि मुद्दों पर लघुकथाकार लेखनी के तेवर दिखा रहे है जो समाज और राश्ट्र हित में आवष्यक हो गया है । ऐसा लेखन को आज के दौर में समाज और राश्ट्र सेवा से जोड़कर देखा जाना चाहिये । लघुकथाकार बनियादी समस्याओं,व्यक्ति से जुड़ी संवेदनाओं, राश्ट्र और प्रकृति को लघुकथा का विशय बना रहे है और ऐसी रचनायें पाठकों आदमियत और प्रकृति से जोड़ने में अहम् निभा रही है । मानवीय समानता,सद्भावना चरित्र निर्माण की दृश्टि से एवं काल–पस्थितियों का लघकथा के रू में चित्रण डां.पूरन सिंह,कालीचरण प्रेमी, सूर्यकान्त नागर,डां.योगेन्द नाथ षुक्ल आदि अनेक कलमकार पूरे उत्तरदायित्व के साथ निभा रहे है ।

लघुकथा जीवन की सच्चाई का पर्याय है। इसकी आकृति को लेकर तरह –तरह के विचार सामने आते है परन्तुयह याद रखने का विशय है कि साहित्य में गणितीय पैमाइष / नापजोख को कोई स्थान तो नही प्राप्त है । लघुकथा रचना प्रक्रिया की जहां तक बात है यह मुद्दा विमर्ष का नही होना चाहिये । यह कलमकार का अपना व्यक्तिगत् मामला है,इसे किसी नियम

में नही बांधा जाना चाहिये इससे की यर्थाथता प्रभावित हो सकती है। लघुकथा के विकास में ये नियम बाधा बन सकते है । आज लघुकथा जो इतनी संबृद्ध है उसकी वजह लेखक की स्वतन्त्रता है । भले ही पाठको की कमी हो परन्तु लघुकथा को विस्तार और कथाकारो को पहचान मिली है । यह लघुकथा के विकास की दृश्टि से स्वर्णिम काल कहा जा सकता है ।इससे यह सिद्ध हो चुका है कि लघुकथा अनुभूति है जीवन दर्षन है सार्थ एवं सफल विधा है । लघुकथा की षब्द सीमा निर्धारित करना कठिन है,कहानी की तुलना में लघुकथा में काफी लघुता होनी चाहिये परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये की लघुकथा अपना मकसद न भूल जाये । कथा की जीवन्तता,उपयोगिता और प्रासंगिता को बनाये रखने के लिये आवष्यक है कि उसके आकार लघु हो और नवीनता बनी रहे । हां लघुकथा लेखन में लेखक अपनी भाशा षैली के लिये स्वतन्त्र है,लेख की अपनी भाशा षैली खुद के लिए आदर्ष हो सकती है परन्तु सभी को यह मान्य हो यह ऐसा नही का जा सकता । हां रचनाकार की भाशा षैली ऐसी होनी चाहिये जो पाठको के मन में उतर जाये और ऐसी कथा से उपजे विचार साहित्य देष और समाज के उत्थान की दृश्टि से हितकारी हो । यह वचनबद्धता लघुकथा को संवृद्ध करने में , विकास और इस आन्दोलन की प्राणवायु साबित हो सकती है ।

वर्तमान समय लघुथाओं का है समय की मांग है ,इसको ध्यान में रखते हुए लेखन भी अहमियत भरा कार्य है । लघुकथा की अपनी सुनिष्चित दिषा के साथ जीवन दृश्टि भी होती है । लघुकथायें वृहद् रूप की सारांष होती है जिसे आज पाठक पसन्द कर रहे है । लघुकथा समय के साथ मानव–मन की गहराई तक को छू लेती है और अर्न्तमन को झकझोर देने की ताकत भी रखती है वषर्ते विशयवस्तु प्रभावी हो । सच है, जीवन संग्राम में होने वाली हर घटनाओं चाहे वे सामाजिक हो,धार्मिक हो आर्थिक हो राजनैतिक हो या अन्य मुद्दे हो को कथाकार हर पहलुओ पर सूक्ष्मता से चिन्तन मनन करता है इसके बाद लघुकथा का सृजन करता है ।,तभी ये कथायें दिल और दिमाग पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। लधुकथा ठीक वेसे ही प्रभावकारी है जैसे भोजपुरी में एक कहावत है, '' छोटी मिर्च तिताई बहुत तेज'' अथवा यो कहे कि बन्दूक से निकली हुई गोली जो सीधे निषाने पर लगती है दूसरे षब्दो में लघुकथा पाठक को झकझोरने का माद्दा रखती है परन्तु प्रस्तुति के साथ कथानक असरदार हो क्योकि लघुकथा में काफी कुछ कहना षेश रहता है जो पाठक पढने के बाद खुद सोच विचार में जुट जाता है । सम्भवतः लघुकथा व्यक्ति विषेश की कथा नही होती लघुकथा किसी के साथ घटी घटना होती है जिसमे वैयक्तितता की प्रधानता नही होती है । यह लघुकथा बहुत कुछ न कहते हुए भी बहुत कुछ कहती है और यही लघुकथा का प्रभाव होना चाहिये । लघुथा जीवन के किसी समस्या की सपाटबयानबाजी होती है दूसरी ओर एक सत्य को उजागररन करने का प्रयास भी है । लघुकथा में विशय,कथानक और जीवन की समस्याओं का चित्रण लघुकथाओं में नजदीक से देखने को मिलता है । लघुकथा दृश्टि है,सोच है,समझ है चिन्तन है अनुभव और यर्थाथ की अभिव्यक्ति है अर्थात लघुकथा लघु रूप में होते हुए समग्र है विराट है । यही कारण है कि लघुकथा अन्य विधाओं से अलग स्थान बना चुकी है विकासषील विधा बन चुकी है ।

लघुकथा का अभ्युदय भले ही आधुनिक काल माना जा रहा हो परन्तु लघुकथा की भारत की माटी में सदियों से कुसुमित है जिसका विस्तार आधुनिक युग में देखा जा रहा है । वर्तमान समय में अनेक पत्रिकायें लघकथा के प्रकाषन में अहम् भूमिका निभा रही है । अनेक लघुकथा संग्रह प्रकाषित हो रहे है जो लघुकथा की लोकप्रियता के परिचायक है । वर्तमान में

लघुकथा विष्व में सफलता के साथ मान्यता प्राप्त कर चुकी है । लघुकथा को अर्न्तराश्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने का श्रेय साहित्यकारो,सम्पादको को जाता है जो खुद संघर्शरत् रहकर साहित्य की इस विधा को अर्न्तराश्ट्रीय स्तर पर स्थापित एवं प्रतिश्ठित किया है गौरव का विशय है कि आज लघुकथा लेखन के क्षेत्र में पुरस्कार सम्मान तक स्थापित हो चुके है परन्तु यह समय खुषियां मनाने का ही नही है,लघुकथा के विकास संभावनाये तलाषने का भी है ।

पाठकों के बदलते रूख को देखकर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास की दृश्टि से चिन्तनीय तो है परन्तु साहित्यकारों की एकता,संघर्श और त्याग ने साहित्य और संस्कृति को कुसुमित किये हुए है । भविश्य में भी यही संघर्श लघुकथा ही नही हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं के विकास में मील के पत्थर साबित होगे । वह दिन दूर नही होगा जब दर्षक पाठक बनने को आतुर होगे उनके हाथों में पुस्तके होगी । साहित्य के विकास की दृश्टि से वह स्वर्णिम काल होगा ऐसे समय की इन्तजार हर लेखक को बेसब्री से इन्तजार रहेगा । लघुकथा के विकास के लिये इस बात की जरूरत है कि वर्तमान समय के रचनाकारों का संघर्श तो जगजाहिर है, साहित्य के प्रति समर्पण भाव भी खूब है बस जरूरत है प्रयासरत् रहने की और नवोदित रचनाकारों को सहयोग प्रदान करने की । विष्वास के साथ कहा जा सकता है कि यह प्रयास उज्जवल भविश्य का द्योतक होगा ।
नन्दलाल भारती 28.08.2010